आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:20-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को स्वयं का और परमात्मा का सत्य स्वरूप का सच्चा ज्ञान देकर, अपने सत्य स्वरूप में टिकने का अभ्यास कराने वाले, ज्ञान-सागर टीचर-बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम अशरीरी बन जब बाप को याद करते हो तो तुम्हारे लिए यह दुनिया ही खत्म हो जाती है, देह और दुनिया भूली हुई है.

अभी तो हम सब जानते है कि यह संगमयुग का बहुत थोड़ा सा समय हमारे पास रह गया है. अभी रहे हुए इस अमूल्य समय में हमें लास्ट ६३ जन्मो के पापों को नष्ट करना है. दूसरा हमें आने वाले सारे कल्प के लिए अपना ऊंच भाग्य बनाना है. तीसरा हमारी आत्मा को दिव्य-गुणों और शक्तिओं से भरना हैं. चौथा हमारी श्रेष्ठ स्थिति बनाकर सारे विश्व की मनसा और कर्मणा सेवा करनी हैं. पाँचवाँ हमें कर्मातीत अवस्था को प्राप्त करना है. यह सब हम तब कर पायेंगे जब की हम हर श्वास एक बाप की याद में रहेंगे.

बाबा की स्मृति सदा रहे इस के लिए हमें अपनी आत्म-अभिमानी अवस्था बनाने का पुरुषार्थ करना हैं क्योंकि हमें निराकारी बाप की याद तब रहेगी जब हम स्वयं को आत्मा समझेंगे और दूसरों को भी आत्मा समझकर कार्य व्यवहार में आयेंगे. देही-अभिमानी अवस्था बनाने के लिए एकाग्रता कि शक्ति का उपयोग कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनानी हैं. एकाग्रता कि शक्ति का उपयोग कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनाने के लिए नीचे दिये हुए स्वमानो का उपयोग कर, स्वयं को एक ज्योति स्टार स्वरूप आत्मा के रुप में फील करें यानी बिजरुप अवस्था में रहने का अभ्यास बढ़ाये. जितनी हमारी देही-अभिमानी अवस्था बढ़ती जायेगी उतना हमारे आस-पास शान्ति का वायुमण्डल भी बनता जायेगा.

इस स्वमानो को उपयोग करने से हमारे व्यर्थ संकल्पों भी समाप्त हो जायेंगे.

में आत्मा हूँ. भृंकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूँ.

में आत्मा हूँ. शांत और पवित्र स्वरूप हूँ . शांति और पवित्रता मेरा स्वधर्म हैं.

में आत्मा हूँ. सत्य हूँ. चैतन्य हूँ. आनंद स्वरूप हूँ.

में आत्मा हूँ. अजड, अमर, अविनाशी हूँ.

में आत्मा हूँ. चैतन्य शक्ति हूँ. ये शरीर जड़ हैं. में चैतन्य शक्ति आत्मा ही शरीर को चला रही हूँ.

में आत्मा हूँ. शरीर मेरा वस्त्र हैं.

अब हम अपनी देही-अवस्था में रहकर, बाबा की आज कि मुरली से निकाले गये कुछ महा-वाक्यों को मन में ही पढ़ेंगे (मुख से बोले बिना). इसे हमें आत्म-अभिमानी अवस्था में रहकर बाबा को याद करने की प्रैक्टिस होगी.

- बाबा कहते हैं आत्मा जब शरीर से न्यारी हो जाती है तो दुनिया से सारा सम्बन्ध टूट जाता है. अपने को आत्मा समझ अशरीरी बन बाप को याद करो तो यह दुनिया खत्म हो जाती है. यह शरीर इस पृथ्वी पर है, आत्मा इनसे निकल जाती है तो फिर उस समय उनके लिए मनुष्य सृष्टि है नहीं. आत्मा शरीर के बिगर नंगी बन जाती है.

- बाबा कहते हैं आत्मा को तो यहाँ शरीर लेकर पार्ट बजाना ही हैं. यहाँ आत्मा को शान्ति कैसे मिल सकती हैं. शान्तिधाम ही आत्माओं का रहने का स्थान हैं, जहाँ से आत्मायें यहाँ पार्ट बजाने आई हैं. अभी कलियुग के अन्त में आत्मायें कितनी ज्यादा अशान्त हैं. हाँ, इस धरती पर जब सतयुग था तो वहाँ पवित्रता, सुख, शान्ति सब था जो परमात्मा ने स्वयं स्थापन किया था. अब तुम्हारी आत्मा को शांति के लिए बाप कहते है अपने घर-शांतिधाम और बाप को याद करो.

- बाबा कहते हैं बाप परमधाम में रहने वाला नॉलेजफुल है, जो सुखधाम का हमको वर्सा देते हैं. वह हम आत्माओं को समझा रहे हैं. यह तो जानते हो नॉलेज होती है आत्मा में. उनको ही ज्ञान का सागर कहा जाता है. वह ज्ञान का सागर इस शरीर द्वारा वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफि समझाते हैं.

- बाबा कहते हैं यह भी तुम जानते हो परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश कराते हैं. त्रिमूर्ति का अर्थ ही यह है - स्थापना, विनाश और पालना. यह निरन्तर याद रहें तो भी आत्मा को बहुत खुशी का अनुभव होगा.

- बाबा कहते हैं बाप ने तुम्हें ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया हैं, जिससे तुम अपने को आत्मा समझ, बाप जो है, जैसा है, उसको उसी रुप में याद करते हो. अब तुम्हारी प्रीत भी एक बाप से हो, तब ही ऊंच पद प्राप्त कर सकेंगे.

ॐ शांति.